भ्रष्टाचार से लड़ाई में आधुनिक तकनीक का महत्व

श्रीमती कृष्णा
रूडकी।

भ्रष्टाचार क्या है? इसे समझना नितान्त आवश्यक हैं। बाद में ही इससे लडाई लड़ी जा सकती हैं। भ्रष्टाचार से तात्पर्य हैं कि वह भ्रष्ट आचरण जिससे व्यक्ति समाज राष्ट्र प्रभावित होता हैं। आज के युग में यदि हम गहराई से देखे तो भ्रष्टाचार समाज में कोढ़ की तरह फैल गया हैं। अधिकांश अधिकारी कर्मचारी इसमें पूरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। आज शासन प्रशासन में भ्रष्टाचार चरम पर हैं। हम यह देखते हैं कि भ्रष्टाचार को लोगों ने 'सुविधा' का नाम देकर प्रचलित कर दिया हैं। जिस आधार पर यह व्यापक रूप ले चुका है।

भ्रष्टाचार व्यक्ति की मानसिक विकृति है, स्वार्थ की परिणीति है, धनलोलुपता का व्यक्तिगत संकेत है। समाज में एक दूसरे को देखा देखी भौतिक साधनों की चकाचौंध व्यक्ति को इस ओर आकर्षित करती है। यह स्वाभाविक बात हैं जब व्यक्ति की जिज्ञासा धन के एकीकरण की ओर लगती है तो व्यक्ति इस ओर पूर्ण रूप से अंधानुकरण की नीति अपनाता हैं। वह अपने पराये की सीमा का भी उल्लंधन कर देता हैं। मानवीय धारणाएं आर्थिक रूप से एक दूसरे से प्रतिस्पर्धात्मक हो जाती हैं, जो एक दूसरे से आगे निकलने की पिपासा जगा देती हैं और व्यक्ति अंधा होकर भ्रष्टाचरण के मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर देता है।

भ्रष्टाचार मानसिक विकृति है। यदि हम भ्रष्टाचार मुक्त होना चाहते हैं तो मानसिक शुद्धिकरण सर्वप्रथम करना आवश्यक है। आज भ्रष्ट नेता, अधिकारी, कर्मचारी को किसी अन्य तकनीक से नहीं समझाया जा सकता। उसके समक्ष तो एक आदर्श स्वरूप प्रकाशित करना पडेगा। गत वर्षों से देखा गया कि इस भ्रष्टाचार के विरूद्व भूख–हडताल हुए, अनशन हुए, बडे–बडे कार्यक्रम किये गये। उनका आंशिक प्रभाव भी पडा किन्तु पूरी तरह हम आश्वस्त नहीं हुए कि इन साधनों द्वारा भ्रष्टाचार से मुक्त हुआ जा सकता है। हमने देखा कि सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे जैसे ईमानदार व्यक्ति ने भ्रष्टाचार के विरूद्व बिगुल बजाया। उनके साथ जनता जुडी, कुछ अधिकारी जुडे और बडे–बडे भाषणों द्वारा भ्रष्टाचार से मुक्त करने के साधन बताए गये। विदेशी बैंकों में भ्रष्टाचरण से जमा धन पर कुछ राजनीति हुई उसमें आंशिक सफलता भी प्राप्त हुई।

इस आन्दोलन से मानसिक आत्मिक बौद्विक बल का प्रभाव दिखाई दिया। अन्ना हजारे अनशन पर बैठ गये वे अपनी शुद्व विचारधारा के आधार पर भ्रष्टाचार से जूझते नजर आए, पर विडम्बना यह हुई कि इस आंदोलन पर भी भ्रष्टाचार की काली छाया पड गई। कुछ सरकारी सेवानिवृत अधिकारी अपने स्वार्थ को लेकर इस आंदोलन से जुड गये और खूब नाम कमाया। बेचारे अन्ना हजारे इस बात को नहीं समझते थे कि ये अधिकारी इस आंदोलन से क्यों जुडे? वे तो बेचारे शुद्व आत्मा व शुद्व विचारों से इस कार्य में लगे थे। उन लोगों ने अपना स्वार्थ साधा। अन्ना के बहाने अपनी राजनीति चमकाई और अन्ना को ही धोखा देकर राजनीति के भ्रष्ट अखाडे में कूद पडे। आज वे लोग राजनीति को भी जीवन का आधार मानकर अलग–अलग पार्टियों से जुड गये और चुनावी रणनीति के आगे बढ़ गये। अब उसमें से कुछ मंत्री बनकर अपना उल्लू साधने में लग गये हैं।

मेरा मानना हैं कि जब शुद्व हाथ से हम शुद्व चरण नहीं करेंगे तब तक भ्रष्टाचार बंद नहीं हो सकता। जब तक मन में स्वार्थ हैं, धनलिप्सा हैं, बेईमानी की लीक पर चल रहे हैं, भ्रष्टाचार कैसे रोका जा सकता हैं। आज की राजनीति तो भ्रष्ट आचरण से प्रभावित हो रहीं हैं। सभी ने जीवन का एक ही उद्देश्य समझ लिया हैं कि येन केन प्रकारेण धन कमाकर अपना ऊँचा स्थान बनाना हैं।

चाहे झूठ बोलकर ही धन कमाना हो। यदि हम आज की राजनीति को देखे जिसके आधार पर प्रधान से लेकर ऊपर तक धन कमाने की होड लगी हैं। यदि हम राजनीति की बात करे तो हम कह सकते हैं कि राजनीति एक ऐसा गंदा तालाब हैं जो भी इस तालाब में स्नान करेगा निश्चित उसके शरीर पर उस तालाब के जल का कुप्रभाव अवश्य पडेगा।

इस भ्रष्टाचार को कोई विदेशी शक्ति दूर नहीं कर सकती, कोई वैज्ञानिक तकनीक भी दूर नहीं कर सकती। यदि भ्रष्टाचार को दूर करना हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को अपना हृदय शुद्व करके कार्य करना होगा। कोई आंदोलन भी इसे दूर नहीं कर सकता हैं। केवल शुद्व भावना इसे दूर कर सकती है। हम सब लोग भारतीय संस्कृति की दुआयें बात–बात में देते हैं, व्यवहार में, कार्य पद्वति में, शिक्षा में, व्यावसायिकता में, किन्तु यदि हममें से देखा जाये तो भारतीय संस्कृति की दुहाये देने वालों को आचार्य चाणक्य, स्वामी विवेकानंद, ईश्वरचंद विद्यासागर, सुभाषचंद बोस जैसे महापुरूषों के चरित्र से शिक्षा लेनी पडेगी तभी भारतीय संस्कृति का दीप प्रकाशित हो सकता हैं और भारत में फैले भ्रष्टाचार का अंत हो सकता हैं।

आज हम देखते हैं कि मनुष्य में पैसे की भूख बढती जा रहीं हैं। प्रतिस्पर्धा की भावना समाज को अपने शिकंजे में जकड रहीं हैं। जिस कारण भ्रष्टाचारण पराकारण पर पहुंच गया हैं। आज मनुष्य का संतोष समाप्त हो गया हैं। संतोष के स्थान पर धनागम की भावना बलवती हो गई है। हमारी संस्कृति में लिखा हैः–

गोधन–गजधन बाजीधन, और रतनधन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन चूर समान।।

जब तक हमारे मन में यह भाव नहीं आयेगा तब तक सुख शान्ति से जीवन नहीं चलेगा। जिस पर हम साधारण लोग विश्वास करते हैं वे लोग ही हमने बिकते देखे हैं। वे अपने अस्तित्व को लेश मात्र भी शुद्वाचरण की पगडण्डी पर नहीं चला सकते। उनके लिए ईमान का कोई ध्यान नहीं होता वे अपना ईमान बेचकर भ्रष्ट मार्ग का अवलम्ब लेना ठीक समझते हैं। उन्हें अपनी प्रतिष्ठा का भी ध्यान नहीं रहता।

मानव को चाहिए कि अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रहे। धन तो हाथ का मैल हैं इसीलिए क्यों अपमान सहे। मैं यह कहना चाहती हूं कि यदि हर राजनेता, हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कार्य से अपनी दिनचर्या से, अपनी कर्तव्यनिष्ठा से और ईमानदारी से समाज के हर जगह पर अपना आदर्श प्रस्तुत करे और स्वयं को जन मानस के लिए स्वच्छ इति प्रस्तुत करे तो सम्भव हैं कि इस भ्रष्टाचार के दानव पर अंकुश लग सकता हैं। यदि एक व्यक्ति स्वयं मद्यपान करता हैं और सब से कहता हैं कि मद्यपान मत करो तो उसकी बात को कौन मानेगा। पहले उस व्यक्ति को ही स्वयं मद्यपान को त्यागना होगा और अपना स्वच्छ आचरण जनता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव पडेगा और व्यक्ति से शुद्वाचरण की भावना बलवती होगी।

किन्तु आज ऐसा नहीं दिखाई दे रहा। हर व्यक्ति अपने अपने स्थान पर उचित या अनुचित साधन से धन कमाने में लगा हुआ हैं। अधिकारी, कर्मचारी रंगे हाथों पकडे जाते हैं, जेल में भेज दिये जाते हैं। नेताओं की सम्पत्ति की कोई सीमा नहीं हैं, कुछ तो शासन ने स्वयं ही इस पर बंदर बाट कर रखी हैं जिससे भ्रष्टाचार को बल मिल रहा हैं। यदि सरकार इन बंदरबाट पर अंकुश लगा दे तो भी कुछ लाभ हो सकता हैं। कुछ विभाग तो ऐसे हैं जिन्हें सरकार अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार करने के लिए प्रेरित करती हैं, शिक्षा को पवित्र क्षेत्र माना जाता हैं शिक्षक व छात्र का अटूट सम्बन्ध केवल शिक्षा ही होती थी किन्तु आज शिक्षा का क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से वंचित नहीं रहा। कई प्रकरण भ्रष्टाचार से अछूते नहीं रहे। तो अब बताइए भ्रष्टाचार को रोकने की क्या तकनीक हैं? स्पष्ट उत्तर हैं शुद्व एवं समाज पर शिक्षा होनी चाहिए। कबीर के शब्दों में–

गुरू कुम्हार, शिख कुम्भ हैं, गढ–गढ काठे खोट।
भीतर हाथ संभार के, बाहर मारे चोट।।

किन्तु आज शिक्षा का स्तर पूर्णरूप से देखा जा रहा हैं। जब शिक्षा जैसा पावन क्षेत्र ही भ्रष्ट रंग में रंग गया हैं तो और के विषय में हम क्या कहे। जब अधिकारी भ्रष्ट हैं तो लिपिक भी भ्रष्ट होगा। सेवक भी भ्रष्ट मार्ग का राही होगा। सर्वप्रथम उस अधिकारी को ही अपना आचरण व्यवहार कर्तव्य निष्ठा शुद्व करके अपना आदर्श प्रस्तुत करने के लिए आगे आना होगा, जिससे उसका आदर्श स्वरूप स्वयं में शुद्वता का प्रतिबिम्ब हो।

जब भारत स्वतन्त्र हुआ तब राजनेता अधिकारी के मत से भारतीयता का शुद्व आचरण प्रतिबिम्बित होता था सब कार्य सुचारू रूप से जनहित के लिए किये जाते थे, सभी में आत्मीयता सौहार्द्व पूर्ण वातावरण था, एक दूसरे के प्रति समरसता थी, दुख–सुख में भागीदारी समझी जाती थी। किन्तु आज इन गुणों का अभाव दिखाई दे रहा हैं। मन की शुद्वता, हृदय की पवित्रता, कार्य के प्रति प्रतिबद्वता, जनहित की भावना का ध्यान रखकर यदि कार्य किया जायेगा और स्वयं अपने स्वच्छ कार्य से आदर्श प्रस्तुत किया जाये तो निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकता हैं और जनता पूर्ण स्वतंत्रता का लाभ उठा सकती है। त्याग समर्पण का भाव जनता के पटल पर अंकुरित करना पडेगा। धन लिप्सा का त्याग करना पडेगा। इस मंत्र के अनुसार–

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्चित जगत्यां जगत।
तेन व्यक्तेन मुंजीधाम् मा गृधःकस्यस्विद्वनम्।।

अर्थात इस संसार में जो भी विद्यमान दिखाई दे रहा हैं वह सब ईश्वर की सत्ता से परिपूर्ण है। इसलिए हे मानव तू इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का भोग त्याग की भावना से कर, और कभी भी कहीं भी किसी के धन को गृहण करने की इच्छा मत कर। यह भावना ही भ्रष्टाचार से मुक्ति दिला सकती हैं।

देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

–सुभाषचन्द्र बोस